ऐसे और भी तर्क हैं जो शरीर के साथ 'मैं' की पहचान के खिलाफ हैं। यदि कोई किसी कारण से शरीर का कोई अंग खो देता है, तो वह व्यक्ति 'मैं' की पहचान को बनाए रखता है, उसकी 'मैं' की पहचान कोई नुकसान नहीं पहुँचता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

मानव शरीर जटिल है। प्रत्येक कोशिका को एक जीवित कोशिका माना जाता है। फिर कोशिकाओं, अंगों आदि के समूह होते हैं। लेकिन 'मैं' की पहचान सभी के लिए समान है। वास्तव में 'मैं 'क्या है? क्या यह कोशिका है? क्या यह कोई अंग है? क्या यह दिल है? क्या यह दिमाग है? क्या यह मस्तिष्क है?

यदि यह दावा किया जाता है कि ये पूरा संकलित समुह जे बड़ी कुशलता से त्वचा में पैक किया गया है 'मैं' है, तो सवाल यह है कि मृत्यु के बाद क्या होता है? संग्रह तो अभी भी बरकरार है।

यदि यह दावा किया जाता है कि जीवित शरीर 'मैं' है, तो इसका मतलब ये है कि जीवन शरीर से अलग है। क्योंकि 'जीवन' शब्द वही है जो 'मैं' से नामित है। मुर्दा 'मैं' नहीं है। इसका मतलब केवल यह हो सकता है की शरीर में खुद को जीवित रखने की क्षमता नहीं है और इसलिए जीवित इकाई शरीर से अलग है। जो कि आत्मा है।

सपनों पर विचार करें। भौतिक शरीर बिस्तर पर आराम कर रहा है और 'मैं' सपनों में घूमता रहता है। क्या 'मैं' भौतिक शरीर है? लेकिन भौतिक शरीर स्थिर है जबकि 'मैं' नहीं है। इस प्रकार भौतिक शरीर 'मैं' नहीं हो सकता।